

एण्डोसल्फान: जब कीटनाशक कीट बन जाए

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

अंग्रेजी भाषा की रैंडम हाउस डिक्शनरी में 'सिनिक' शब्द की परिभाषा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दी गई है जो मानता है कि मानव कार्यों की एकमात्र प्रेरणा स्वार्थ होती है और जो निस्वार्थ कामों या निष्पक्ष मतों में विश्वास नहीं करता। इसके अलावा सिनिकल उसे कहा गया है जो ईमानदारी और नैतिकता के मान्य मानकों के प्रति निरादर का भाव रखता है।

कीटनाशक एण्डोसल्फान पर प्रतिबंध के मामले में सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत दलीलों को पढ़ते हुए, यही दो शब्द दिमाग में कौंध गए। केंद्र सरकार ने ये दलीलें डेमोक्रेटिक यूथ फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा दायर की गई याचिका के संदर्भ में दी। याचिका में कहा गया था कि एण्डोसल्फान का मानव जीवन व पर्यावरण पर हानिकारक असर पड़ता है और इस पर प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए। अदालत की कार्रवाई की रिपोर्ट देते हुए *दी हिंदू* के जे.वेंकटेशन ने 3 अगस्त को लिखा था: "केंद्र ने (अपने जवाब में) कहा कि इस कीटनाशक के लंबे समय तक उपयोग से जन स्वास्थ्य सम्बंधी कोई समस्या पैदा होने की आशंका नहीं है। केंद्र ने स्पष्ट किया कि केरल के कासरगोड में उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं का कारण एण्डोसल्फान नहीं है।" अदालत ने केंद्र सरकार से कहा कि वह स्वास्थ्य के मुद्दों पर विचार करने के लिए एक समिति गठित करे और अपना प्रतिवेदन दे।

यह समिति गठित हो गई है और *दी हिंदू* ने 6 अगस्त के दिन लिखा: "समिति की अंतरिम रिपोर्ट में कहा गया है कि जन स्वास्थ्य की समस्याएं या खतरे केरल व कर्नाटक के अलावा किसी अन्य राज्य से रिपोर्ट नहीं किए गए हैं।" और केंद्र ने यही राय ज़ाहिर की कि केरल और कर्नाटक के अलावा कहीं भी फसलों, मनुष्यों अथवा पशुओं के स्वास्थ्य या पर्यावरण पर इस कीटनाशक के नकारात्मक प्रभाव रिपोर्ट नहीं हुए हैं और अन्य राज्यों में प्रतिबंध नहीं

लगाया जाना चाहिए।

क्या सरकार सही है? क्या केरल और कर्नाटक पर्यावरण और जिनेटिक दृष्टि से इतने अलग हैं कि मात्र इन्हीं दो जगहों पर जीवन पर एण्डोसल्फान का प्रतिकूल असर पड़ा है? या क्या दलील का आधार यह है कि एण्डोसल्फान पर प्रतिबंध का असर बाज़ार पर पड़ेगा? एण्डोसल्फान का वार्षिक कारोबार 270 करोड़ रुपए का है। तीन निर्माता (हिंदुस्तान इंसेक्टीसाइड लिमि., कोरोमंडल फर्टिलाइज़र्स, और एक्सेल क्रॉप केयर) प्रति वर्ष कुल 8500 टन एण्डोसल्फान का उत्पादन करते हैं, जो विश्व उत्पादन का 70 फीसदी है।

विज्ञान में, हम किसी विषय पर उपलब्ध सारे आंकड़ों और जानकारी का इस्तेमाल करते हैं, उनकी सुसंगति और अकाट्यता पर ध्यान देते हैं, और देखते हैं कि क्या उनसे मिली सूचना का कोई अर्थ निकलता है या सही निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए अभी और शोध की ज़रूरत है। और, सवाल जब जन स्वास्थ्य व कल्याण का हो, तो समाज आम तौर पर अतिरिक्त सावधानी से कदम उठाता है।

लिहाज़ा, यह देखना चाहिए कि पर्यावरण व स्वास्थ्य पर एण्डोसल्फान के असर के बारे में अब तक विज्ञान क्या कहता है। इस संदर्भ में कई सारे समग्र विवरण ऑनलाइन उपलब्ध हैं। एक है विकिपीडिया। एण्डोसल्फान सम्बंधी इसका आलेख 94 संदर्भों के आधार पर तैयार किया गया है। इसी विषय पर एक और रिपोर्ट <http://www.panna.org/resources/specific-pesticide/endosulfan> है।

इन रिपोर्ट्स में एण्डोसल्फान के प्रभावों का विवरण और इस बाबत किए गए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों (विश्व स्वास्थ्य संगठन, एन्वायर्मेंटल जस्टिस फाउंडेशन, पार्टिज़न टू दी रॉटरडैम कन्वेंशन) की जानकारी के अलावा स्वयं भारत सरकार के शोध केंद्रों व उद्योग समूहों की रिपोर्टें भी हैं।

सी.एस.आई.आर. की लखनऊ स्थित प्रयोगशाला औद्योगिक विष विज्ञान अनुसंधान केंद्र ने 1989 में एक रिपोर्ट जारी की थी (टॉक्सिसिटी डेटा हैण्डबुक, खंड 3, कीटनाशक-ए) जिसमें एण्डोसल्फान को अत्यंत खतरनाक घोषित किया गया था।

“दी फायनल रिपोर्ट ऑफ दी इंवेस्टीगेशन ऑफ अनयुज़अल इलनेसेस एलेज्डली प्रोड्यूसड बाय एण्डोसल्फान एक्सपोज़र इन पांद्रे विलेज, नॉर्थ केरल: नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑक्यूपेशनल हेल्थ स्टडी” (उत्तरी केरल के पांद्रे गांव में एण्डोसल्फान संपर्क के कारण पैदा हुई असामान्य बीमारियों की खोजबीन की अंतिम रिपोर्ट: राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान का अध्ययन) में कहा गया था कि शुरुआती उम्र में एण्डोसल्फान से संपर्क आगे चलकर प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव का कारण बन सकता है।

अब देखें कि ताज़ा वैज्ञानिक अनुसंधान क्या कहता है? *पबमेड* में की गई खोजबीन से पता चला कि

क) यूगांडा के कंपाला के बाज़ार में उपलब्ध ताज़ा व पाश्चरीकृत दूध में ऑर्गेनो-क्लोरीन कीटनाशक (एण्डोसल्फान, डीडीटी, एल्ट्रिन वगैरह) के अवशेष पाए गए। (*कीमोस्फीयर*, अगस्त 2011)

ख) एण्डोसल्फान चूहों के मस्तिष्क में तंत्रगत विषाक्तता उत्पन्न करता है (यूनान में किया गया अध्ययन, *दी जर्नल ऑफ टॉक्सिकोलॉजिकल साइन्सेज़*, अप्रैल 2011)

ग) अंडमान द्वीपसमूह में हमारी अपनी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की प्रयोगशाला द्वारा किए गए एक अध्ययन में पता चला था कि एण्डोसल्फान के संपर्क से मछलियों में यकृत पर गंभीर कुप्रभाव होते हैं (*फिश फिज़ियोलॉजी एंड बायोकेमेस्ट्री*, जून 2011)

लिहाज़ा अदालत में केंद्र सरकार द्वारा दी गई दलीलें विज्ञान के नज़रिए से कमज़ोर हैं और शायद व्यापार के नज़रिए से मज़बूत है। दूसरे शब्दों में ये स्वास्थ्य पर कम संपदा पर ज़्यादा केंद्रित हैं। अन्यथा ऐसा क्यों हुआ कि कृषि मंत्री शरद पवार ने छः माह पहले ही घोषित कर दिया था कि भारत एण्डोसल्फान पर प्रतिबंध नहीं लगाएगा?

पूरा प्रकरण डीडीटी प्रकरण की दुखद यादें ताज़ा कर



देता है। डीडीटी को एक समय पर एक अद्भुत कीटनाशक कहा गया था और एक पीढ़ी पहले इसका खूब उपयोग किया गया था। इसके कुप्रभाव और स्वास्थ्य सम्बंधी खतरे बाद में सामने आए थे और आज दुनिया भर में इस पर प्रतिबंध है। आपको शायद याद होगा कि डीडीटी का संश्लेषण सबसे पहले 1874 में किया गया था मगर इसके कीटनाशी गुण जर्मन वैज्ञानिक पॉल मुलर की बढौलत 1939 में प्रकट हुए थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मच्छरों के खिलाफ इसका उपयोग एक बड़ी सफलता थी। इसके मद्देनज़र मुलर को 1948 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

सिबा, ओलिन, मॉन्सेंटो और मॉन्ट्रोस जैसी कंपनियों ने टनों में डीडीटी का उत्पादन किया। फिर आई रेशेल कार्लसन, जिन्होंने अपनी युगांतरकारी पुस्तक *दी साइलेंट स्प्रिंग* में इस बात का सिलसिलेवार ब्योरा दिया कि डीडीटी किस तरह का पर्यावरण विनाश पैदा करता है।

इसने पर्यावरण आंदोलन को प्रेरित किया और इस आंदोलन के चलते 1972 में डीडीटी के व्यापक उपयोग पर प्रतिबंध लगा। एण्डोसल्फान के मामले में प्रतिकूल परिणाम हमारे सामने काफी जल्दी उभर चुके हैं। इसका सर्वप्रथम उत्पादन 1954 में हुआ था और इसके कुप्रभाव 1990 तक पता चल चुके थे। आज से पूरे एक दशक पहले कई देशों में इस पर प्रतिबंध लग चुका है। हमें भी इस मामले में ऐहतियात के सिद्धांत का पालन करना चाहिए और एण्डोसल्फान पर रोक लगा देनी चाहिए। साथ ही सुरक्षित विकल्पों पर अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यही विज्ञान का तरीका होगा। (*स्रोत फीचर्स*)